आज का पुरुषार्थ 22 July 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"आओ चले सम्पूर्णता के ओर .. तो आज देखें कहा तक सभी कर्मों के बंधन से मुक्त बने है ? "*

कितना सुन्दर समय है। हमारा मिलन हमारे परमपिता से हुआ। युगों से इन्तजार थी ...

" हे प्रभु ! एकबार तुम्हें देख तो ले तुम कैसे हो ? "

और भाग्य इतना खुला कि देखना तो दूर, दोनों का सुन्दर मिलन हो गया। दोनों एक दो के सम्बन्धी बन गये। कितने समीप आ गये। वह हमारे, हम उनके।

सचमुच, बाबा ने आकर जन्म जन्म की प्यास मिटा दी। हमें वह सबकुछ दे दिया जो हमें चाहिए था। अब हमारी बारी है। **हम बाबा से वह सबकुछ ले ले, जो वो हमें देना चाहते है।**

और उनकी इच्छा है कि ..

" मेरे बच्चे .. सभी बन्धनों से मुक्त होकर अब कर्मातीत बने "

क्योंकि घर जाने का समय समीप आता जा रहा है। अपने को चेक कर ले ..

" हम कहाँ उलझें है? हमने कौन कौन सी डालियां पकड़े है? "

घर तो जाना है, चक्र पूरा होने को है। हम इसके हीरों एक्टर है। सबकुछ यही छोड़कर बाबा से सर्वश्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करके हमें अपनी घर वापिस चले जाना है।

गहन चिंतन करे .. " जाने का समय आता जा रहा है "

संसार में उलझनें, समस्यायें, विकार, पाप सभी बढ़ते जा रहे है। हमें स्वयं को **विवेकपूर्ण** होकर इन सबसे स्वयं को मुक्त करके चलना है।

क्योंकि यह कुछ भी काम न आयेगा। न कोई सम्बन्धी साथ देगा, न धन-सम्पदा-पद-position साथ देगी। यह सब यहाँ के है।

इसलिए इनमें निमित्त भाव धारण करके अब ईश्वरीय कमाई करनी है। और स्वयं को कर्मातीत बनाना है।

कर्मातीत होना अर्थात, सभी विकर्मो से अतीत हो जाना। सभी विकर्मो के बोझ से स्वयं को मुक्त कर देना। सभी विकारों से स्वयं को मुक्त कर देना।

आत्मा बिल्कुल निर्मल हो जाये। जैसी स्वच्छ थी, बिल्कुल क्लीन, कुछ नहीं। केवल पारफेक्शन। वह स्थिति पुनः हमें प्राप्त करनी है।

निःसंदेह, कुछ जोर लगाना पड़ेगा। विशों नाखूनों का जोर लगाना पड़ेगा। कोई चाहे कि वह **कर्मातीत** भी हो जाये, सजाओं से भी मुक्त रहे, उसके पद भी महान हो जाये।

और यहाँ पर वह समय भी न दे? उलझा रहे, सम्बन्धों में, काम-धंधों में टाइम ही न हो बाबा के तरफ देखने का, तो भला **श्रेष्ठ स्थिति** बनेगी कैसे?

तो आज चेक करेंगे ..

कौन कौन से बंधन हमको बांधे हुए है?

यहाँ जो लौकिक बंधन है, वह **पूर्व जन्मों के कर्मों बन्धनों के कारण भी है।** हमें उनसे भी छुटना है योगबल से, और आत्मिक भाव धारण करके।

समझ ले इन गुह्य रहस्यों को। आत्मिक दृष्टि, आत्मिक वृत्ति, आत्मिक भाव धारण करने से बंधन ढीले पढ़ने लगेंगे। अशरीरी होने से देह का बंधन ढीला पढ़ने लगेगा। और देहधारियों के बंधन एटचमेंट्स सब ढीले पढ़ जायेंगे।

दूसरा चेक कर ले .. कर्मबंधन।

कर्मक्षेत्र पर हम रहते है। कहीं उसमें उलझे हुए तो नहीं है? कहीं हमारा जीवन कर्ममय तो नहीं हो गया है? कर्मों की टेन्शन, कर्म का ही चिंतन, कर्म की ही चिंता, इसे चेक कर ले ...

कहीं एटचमेंट्स और किसी विकार का बंधन तो हमें अपनी ओर खींच नहीं रहा है?

इन सब का त्याग करेंगे, तब हम योगयुक्त हो सकेंगे। तब हमारी स्थिति बहुत अच्छी होगी।

तो आज हम अपने सभी सम्बधियों को **आत्मिक दृष्टि** और **आत्मिक भाव** से देखे ...

" यह सब आत्मायें है .. देवकुल की है .. अब हम सबको एकसाथ वापिस घर चलना है .. इन सबको भी अपने अपने कर्मों के हिसाब किताब है .. इन सबका भी अपना भाग्य है .. इन सबका भी अपना पार्ट है "

पाँच बार अवश्य करेंगे यह अभ्यास और हर घन्टे में अशरीरी होने की प्रैक्टिस।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org